आत्म-भक्ति

Ātma-Bhakti

कविश्री मनोहरलाल वर्णी 'सहजानंद'

Kaviśrī manōharalāla varṇī'sahajānanda'

मेरे शाश्वत-शरण, सत्य-तारणतरण ब्रह्म प्यारे |
तेरी भक्ति में क्षण जायें सारे || टेक||
ज्ञान से ज्ञान में ज्ञान ही हो, कल्पनाओं का एकदम विलय हो |
भ्रांति का नाश हो, शांति का वास हो, ब्रह्म प्यारे |
तेरी भक्ति में क्षण जायें सारे ||१||
Mērē śāśvata-śaraṇa, satya-tāraṇataraṇa brahma pyārē |
Tērī bhakti mēṁ kṣaṇa jāyēṁ sārē..Ṭēka ||
Jñāna sē jñāna mēṁ jñāna hī hō, kalpanā'ōṁ kā ēkadama vilaya hō |
Bhrānti kā nāśa hō, śānti kā vāsa hō, brahma pyārē |
Tērī bhakti mēṁ kṣaṇa jāyēṁ sārē ||1||

सर्वगतियों में रह गति से न्यारे, सर्वभावों में रह उनसे न्यारे |
सर्वगत आत्मगत, रत न नाहीं विरत, ब्रह्म प्यारे |
तेरी भक्ति में क्षण जायें सारे ||२||
Sarvagatiyōṁ mēṁ raha gati sē n'yārē, sarvabhāvōṁ mēṁ raha unasē n'yārē |
Sarvagata ātmagata, rata na nāhīṁ virata, brahma pyārē |
Tērī bhakti mēṁ kṣaṇa jāyēṁ sārē ||2||

सिद्धि जिनने भी अबतक है पाई, तेरा आश्रय ही उसमें सहाई |
मेरे संकटहरण, ज्ञान-दर्शन-चरण, ब्रह्म प्यारे |
तेरी भक्ति में क्षण जायें सारे ||३||
Sid'dhi jinanē bhī abataka hai pāi, tērā āśraya hī usamēṁ sahāi |
Mērē saṅkaṭaharaṇa, jñāna-darśana-caraṇa, brahma pyārē |
Tērī bhakti mēṁ kṣaṇa jāyēṁ sārē ||3||

All copyrights reserved © 2Alotus

देह-कर्मादि सब जग से न्यारे, गुण व पर्यय के भेदों से पारे |
नित्य अन्त:अचल, गुप्त ज्ञायक अमल, ब्रह्म प्यारे |
तेरी भक्ति में क्षण जायें सारे ||४||

Dēha-karmādi saba jaga sē n'yārē, guṇa va paryaya ke bhēdōṁ sē pārē |
Nitya anta:Acala, gupta jñāyaka amala, brahma pyārē |
Tērī bhakti mēṁ kṣaṇa jāyēṁ sārē ||4||

आपका आप ही श्रेय तू है, सर्व श्रेयों में नित श्रेय तू है |
सहजानंदी प्रभो, अन्तर्यामी विभो, ब्रह्म प्यारे |
तेरी भक्ति में क्षण जायें सारे ||५||

Āpakā āpa hī śrēya tū hai, sarva śrēyōṁ mēṁ nita śrēya tū hai |
Sahajānandī prabhō, antaryāmī vibhō, brahma pyārē |
Tērī bhakti mēṁ kṣaṇa jāyēṁ sārē ||5||

* * * A * * *

2Alotus

All copyrights reserved © 2Alotus